



"मुंशी प्रेमचंद कृत गोदान उपन्यास में गाय का महत्व"

शोधार्थी :- किशोर एन. जेपाल

हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात यूनिवर्सिटी - पाटण

Email - kishorjepal54@gmail.com

शोध सार :

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के यथार्थवादी और जनसरोकार से जुड़े महान कथाकार हैं। उनका कालजयी उपन्यास 'गोदान' भारतीय ग्रामीण जीवन की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों का सजीव चित्रण दर्शाता है। गोदान का अर्थ ही है - "गाय का दान" जो भारतीय समाज में धार्मिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। गाय भारतीय समाज में मातृत्व, समृद्धि और धर्म की प्रतीक मानी जाती है। गाँव के किसान के लिए गाय केवल एक पशु नहीं, बल्कि आजीविका का साधन, परिवार का हिस्सा और धार्मिक आस्था का केन्द्र है।

उपन्यास के अंत में जब होरी मृत्युशय्या पर होता है, तो उसकी पत्नी धनिया एक रुपए में गाय दान करने की रस्म निभाती है। यह दृश्य दर्शाता है कि यथार्थ में भले ही किसान गाय न पाल सका, पर उसकी आत्मा को शांति केवल गोदान से ही मिलती है।

शोध शब्द : गाय, किसान, ग्रामीण, जीवन, धार्मिक, आर्थिक, निर्धनता, दान इत्यादि।

शोध विस्तार :

प्रेमचंद कृत 'गोदान' उपन्यास के कथानायक होरी के मन में एक गाय रखने की लालसा है। प्रेमचंद ने लिखा है कि प्रत्येक गृहस्थ की भाँति होरी के मन में भी गाय की लालसा लंबे समय से संचित होकर चली आती थी। यही उसके जीवन का सपना था। होरी रायसाहब को मिलने बेलारी से सेमरी जाते वक्त पगदंडी के दोनों ओर ईख के पौधों की लहलहाती हुई हरियाली देखकर मन ही मन कहता है भगवान कहीं गौ से बरखा कर दें तो एक गाय जरूर लेगा। वह पछाई गाय लेगा। और उसकी खूब सेवा करेगा। कुछ भी नहीं तो चार-पाँच सेर दूध होगा। गाय से ही तो द्वार की शोभा है। प्रातःकाल गऊ के दर्शन हो जाएँ तो क्या कहना। न जाने कब यह आश पूरी होगी, कब वह शुभ दिन आएगा। अचानक रास्ते में भोला की गायों को देखकर होरी का मन लालसा जाग्रत होती है। तब वह भोला की खुशामद करते हुए उससे कहता है- "धन्य है तुम्हारा



जीवन। गऊओं की इतनी सेवा करते हो ! हमें तो गाय का गोबर भी मयस्सर नहीं । गिरस्त के घर में एक गाय भी न हो, तो कितनी लज्जा की बात है।"¹

होरी बातचीत के दौरान भोला की प्रशंसा करता है। वह भोला को उसकी सगाई करा देने का झूठा आश्वासन भी देता है। यह सुनकर भोला खुश हो जाता है। होरी को एक कजरी गाय अस्सी रुपये में, वह भी उधार देने के लिए राजी हो जाता है। वह होरी के हाथ में गाय की पगहिया देकर गाय उसके घर तक पहुँचा देने को कहता है। वह गौ-सेवा को परम धर्म मानने वाले के हाथ में गाय बेचने को उचित मानता है। वह होरी से कहता है - 'हाकिमों को गऊ की सेवा से क्या मतलब? वह तो खून चूसना भर जानते हैं। जब तक दूध देती, रखते, फिर किसी के हाथ बेच देते। किनके पल्ले पड़ती, कौन जाने। रुपया ही सब कुछ नहीं है भैया । कुछ अपना धरम भी तो है। तुम्हारे घर आराम से रहेगी तो।"²

होरी को जब मालूम हुआ कि भोला के पास गाय को खिलाने के लिए भूसा नहीं है। वह बड़ी आर्थिक संकट में है, तब होरी संकट के समय लेने वाली चीज को लेना पाप मानता है, फिर कभी गाय लेने का वादा करके भोला से गाय नहीं लेता। वहाँ से जाते वक्त होरी ने पीछे मुड़कर देखा कि कबरी गाय पूँछ से मक्खियाँ उड़ाती, सिर हिलाती, मस्तानी, मंद गति से झुमती चली जाती थी। जैसे बांदियों के बीच में कोई रानी हो। होरी कल्पना करता है - कैसा शुभ होगा वह दिन जब यह कामधेनु उसके द्वार पर बंधेगी । घर पर चर्चा होती है तो गोबर कहता है कि "बात तो एकदम साफ है, अस्सी रुपये की गाय है, हमसे बीस रुपये का भूसा ले लें और गाय हमको दे दें। साठ रुपये रह जाएँगे, वह हम आपको धीरे-धीरे दे देंगे।" यह सुनकर होरी सोचता है कि - मैंने ऐसी चाल सोची है कि गाय सेंट सेंट में हाथ आ जाए। कहीं भोला की सगाई ठीक करनी है बस । दो-चार मन भूसा तो खाली अपना रंग जमाने को देता हूँ।

गोबर होरी का बेटा है। जिसका मूल नाम गोवर्धन है। गोबर भोला की गाय देखकर अत्यंत खुश हो जाता है। गोबर की आँख उसी गाय पर लगी हुई थी और मन ही मन वह भी मुग्ध हो गया। गाय इतनी सुन्दर और सुडौल है। इसकी उसने कल्पना भी न की थी। गोबर होरी से नांद गाड़ने कह कर गाय लाने चला जाता है। गोबर के लौटने में देर होती है तो वह बेचैन हो जाता है। गाय के आने से पहले होरी नांद गाड़ना नहीं चाहता। उसे आशंका है कि अगर भोला बदल जाएगा तो सारा गाँव तालियाँ पीटने लगेगा। रूपा चाहती



है कि गाय आ जाएगी तो वह गोबर थापेगी और दूध दुहेगी। दूर से भैया को गाय लाते हुए देखकर सोना और रूपा दोनों दौड़ी हुई आकर सभी को यह सूचना देती हैं। किसने पहले भैया को देखा। इस पर दोनों बहनों में झगड़ा हो जाता है। गाय पहुँचती है तो होरी जल्दी नांद गाड़ना चाहता है। धनिया आटा और गुड़ घोलकर गाय को पिलाना चाहती है। गाय को कहीं नजर न लग जाए इसलिए धनिया दुकान से काला धागा मंगवाकर उसके गले में बाँधना चाहती है। गोबर गाय लेकर आता है, तो उसके पीछे पीछे गाँव के लड़के चले आते हैं। दौड़कर गाय के गले से लिपट जाता है। धनिया देर न करके एक पुरानी साड़ी का काला किनारा फाड़कर गाय के गले में बाँध देती है। दूसरों की नजर न लगे, इसलिए धनिया आँगन में नांद गाड़ा जाना चाहती है। होरी नांद बाहर गाड़ना चाहता है।

होरी श्रद्धा से गाय को देख रहा है। वह मानता है कि यह गाय नहीं मानो साक्षात् देवी ने घर में पदार्पण किया हो। गाय के चरणों से घर पवित्र हो गया। यह सौभाग्य बड़े पुण्य-प्रताप से मिला है। उसके लिए गाय केवल श्रद्धा भक्ति की वस्तु नहीं। सजीव संपत्ति भी है। गाँव में अस्सी रुपए की गाय तो दूर-पचास-साठ रुपये की गाय का आना भी अभूतपूर्व बात थी। सब दौड़कर गाय देखने आते हैं। पंडित दातादीन गाय के सींग, धन, पुट्टा देखकर गाय के लक्षण अच्छा बताते हैं। वे होरी से कहते हैं "भगवान चाहेंगे तो तुम्हारे भाग्य खुल जाएँगे।"³

गाय को देखने के लिए होरी के दो भाई हीरा और शोभा नहीं आते तो होरी दोनों को बुलाकर गाय दिखाना चाहता है। हीरा गाय को देखकर जलता है। होरी हीरा और शोभा की बातचीत सुनकर हीरा के मन की दुर्भावना को जान जाता है। वह अब गाय को लौटा देने का निश्चय करता है। होरी और गोबर गाय के आधी-आधी रोटियाँ खिलाने आते हैं, पर गाय नहीं खाती। रूपा गाय का मुँह सहलाती है। झींगुरी सिंह होरी की गाय पर नजर रखता है। एक दिन होरी कर्जा लेने झींगुरीसिंह के पास पहुँचता है तो वह उसे सुनहरा मौका पाकर उसके गाय को बेच देने का प्रस्ताव रखता है। गाय बेचने की बात सुनते ही सोना कहती है कि मुझे ही बेच दो, पैसे ज्यादा मिल जाएँगे। होरी परिस्थिति के सामने वह लाचार और विवश हो जाता है। किसी भी तरह होरी धनिया और गोबर को गाय बेचने को राजी करा देता है और तय होता है कि दोनों लड़कियाँ रात को सो जाने के बाद गाय को झींगुरी सिंह के पास पहुँचा देंगे।



वह रात को जाकर गाय के पास खड़ा होता है तो उसे लगता है कि गाय की आँखों में आँसू भरे हुए हैं। गाय उसे याद दिला देती है कि उसने गाय न बेचने का वचन दिया था। होरी फिर निश्चय कर लेता है किसी भी हालत में वह गाय नहीं बेचेगा। यह सुन धनिया खुश हो जाती है। भीतर बड़ी उमस हो रही थी। गाय को आराम पहुँचाने के लिए होरी उसे बाहर बांध देता है। फिर अपने भाई शोभा से मिलने जाता है। कोई ग्यारह बजे लौटते समय वह गाय के पास हीरा को देखता है। वह गाय को जहर खिला देता है। गाय मर जाती है। गाय का कर्जा उत्तर नहीं पाता। होरी की फिर गाय खरीदने की सामर्थ्यता नहीं रहती और तमन्ना अधूरी रह जाती है। रूपा पति रामसेवक के घर पर गायों को देखती है तो उसकी स्मृति फिर सजीव हो जाती है- उस गाय की याद अभी भी उसके दिल में हरी थी, जो मेहमान की तरह आई थी और सबको रोता छोड़कर चली गई थी। होरी अपने पोते के दूध के लिए एक गाय लेना चाहता है। वह किसान की मर्यादा छोड़कर मजदूरी करता है। वह कहता है ठेकेदार से रुपये मिले और गाय लाया।

मृत्यु के समय भी होरी को गाय याद आती है। वह कल्पना से देखतने लगता है की एक कामधेनु - सी गाय उसके सामने आ जाती है। उसका दूध दुहकर मंगल को पिलाते समय गाय एक देवी बन जाती है। धनिया के पुकारने पर वह अर्धचेतन अवस्था में कहता है तुम आ गए गोबर! मैंने मंगल के लिए गाय ले ली है। वह खड़ी है देखो। होरी धनिया से कहता है- मेरा कहा सुना माफ कर देना धनिया। अब जाता हूँ। गाय की लालसा मन में ही रह गई। अब तो गाय के रुपये क्रिया-कर्म में जाएँगे।

होरी की मरणासन्न स्थिति को देखकर हीरा रोते हुए भाभी से कहता है "भाभी ! दिल कड़ा करो। गो-दान करा दो। दादा चले।"⁴ बहुत से लोग यही सुझाव देते हैं- हाँ गोदान करा दो यही समय है। धनिया सुतली बेचने से मिले बीस आने पैसे लाई और उसे पति के ठंडे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोलती है "महाराज! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं। यही इनका गो-दान है।"⁵

निर्धनता, अंध-विश्वास, धार्मिक भय और शोषण सब मिलकर होरी की एक गाय रखने की कामना को अपूर्ण रख देते हैं। होरी जीवन भर जुझारू योद्धा की तरह जीवन-संग्राम में लड़कर अंत में काल के गाल में समा जाता है।



निष्कर्ष:

गोदान में गाय केवल एक पशु नहीं, बल्कि ग्रामीण किसान की संस्कृति, आस्था, पहचान और संघर्ष का प्रतीक है। प्रेमचंद ने इस प्रतीक के माध्यम से भारतीय कृषक समाज की जड़ताओं, आस्थाओं और विडंबनाओं को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया है। होरी का "गाय पालने का सपना" वस्तुतः एक आदर्श जीवन, सामाजिक सम्मान और धार्मिक संतुलन की तलाश है - जो आज भी भारतीय ग्राम्य जीवन में प्रासंगिक बना हुआ है।

संदर्भ सूची:-

- 1 गोदान, डायमंड बुक्स - नई दिल्ली, संस्करण 2006 पृष्ठ संख्या 8
- 2 गोदान, डायमंड बुक्स - नई दिल्ली, संस्करण 2006 पृष्ठ संख्या 9
- 3 गोदान, डायमंड बुक्स - नई दिल्ली, संस्करण 2006 पृष्ठ संख्या 35
- 4 गोदान, डायमंड बुक्स - नई दिल्ली, संस्करण 2006 पृष्ठ संख्या 327
- 5 गोदान, डायमंड बुक्स - नई दिल्ली, संस्करण 2006 पृष्ठ संख्या 327



**MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (On-line)**

International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding
this certificate to
किशोर एन. जेपाल

In recognition of the publication of the paper entitled
"मुंशी प्रेमचंद कृत गोदान उपन्यास में गाय का महत्व"

Published in Volume 03, Issue 05, June 2025.

EDITOR IN CHIEF